भक्ति और संगीत

डॉ0 श्रुति होड़ा

भक्ति संगीत के द्वारा ही भारतीय संगीत का विकास हुआ है। यह भक्ति संगीत अन्य विदेशी संगीत के मिश्रण से हमेशा अछूता रहा है हैरानी की बात है कि संगीत का इतिहास लिखने वाले लेखक अधिक प्रमाणित दरबारी संगीत को मानते है जब कि मूल संगीत की परम्पराएं आज भी भक्ति संगीत में पाई जाती है। वास्तविकता यही है कि संगीत का मूल आदर्श भक्ति संगीत ही है। एक अच्छा कीर्तनकार अथवा भजनीक संगीत के उन सभी गूढ रहस्यों का ज्ञाता होता है क्योंकि यह आहत तथा अनाहत दोनों की साधना करते हैं और दोनों नाद ही संगीत और भक्ति की आधार शिला है।

संगीत की उत्पति और विकास में भक्ति का विशेष महत्त्व है, क्योंकि भक्ति भी संगीत के माध्यम से होती है। जीवन के लक्ष्य अखंड आन्नद की प्राप्ति के लिए मन वचन और कर्म से भगवान की भक्ति आवश्यक है। भगवान के प्रति अनन्य प्रेम तथा समर्पण की भावना को ही भक्ति कहते हैं।